नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भाषाएं साहित्य, संस्कृति का विस्तार करती हैं

आयुर्वेदिक महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने जाना देशी-विदेशी भाषाओं का महत्व

सावंगी में हिंदी विश्वविद्यालय का 'संवाद' कार्यक्रम

वर्धा, 16 जुलाई 2016 : भाषाएं साहित्य, संस्कृति के विस्तार का काम करती है। अपने कार्यक्षेत्र को व्यापकता प्रदान करने के लिए भाषाएं प्रभावी उपकरण के रूप साबित होती हैं। उक्त बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने दत्ता मेघे आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा संचालित महात्मा

गांधी आयुर्वेद महाविद्यालय, रूग्णालय और अनुसंधान केंद्र, सालोड, वर्धा के विद्यार्थियों के समक्ष कही। विवि

के भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र तथा जनसंपर्क विभाग की ओर से आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिए 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन शनिवार को किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. शाम भूतड़ा, अध्यापक डॉ. गौरव सावरकर, डॉ. अनिल आव्हाड़, नम्रता चौरागड़े तथा विवि के स्पेनिश भाषा के

सहायक प्रोफेसर रवि कुमार, फ्रेंच के संदीप कुमार तथा संस्कृत के लेखराम दन्नाना उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में संचालित हिंदी, मराठी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी तथा चीनी, जापानी, फ्रेंच, स्पेनिश इन भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रमों के बारे में वर्धा के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अपने व्यक्तित्व विकास एवं करियर में भाषाओं के महत्व को समझाने तथा उन्हें विश्वविद्यालय से जोड़ने के प्रयास को लेकर 'संवाद' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दो सौ से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

रवि कुमार ने भारतीय एवं विदेशी भाषा के अध्ययन के महत्व को अधोरेखित करते हुए उनमें

रोज़गार की संभावनाओं से अवगत कराया। संस्कृत के अध्यापक लेखराम दन्नाना ने संस्कृत में आयुर्वेद का मूल और महत्व जानने के लिए संस्कृत भाषा पढ़ने की आवश्यकता पर बल दिया। विद्यार्थियों विदेशी भाषाओं में किन-किन देशों में करियर की संभावनाएं हैं इसपर सवाल उपस्थित किए जिसका अध्यापकों ने समाधान किया। कार्यक्रम का संचालन जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने किया तथा आभार डॉ. गौरव सावरकर ने माना।